चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19-10-23	4	6-8

आलू की नई किस्म एमएसपी 16-307 व कुफरी सुख्याति ईजाद की, अधिक पैदावार का दावा

उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए ये किस्में बेहतर बताई गईं

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। परियोजना के अंतर्गत एमएसपी 16-307 और कुफरी सुख्याति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं और इनकी भंडारण क्षमता अधिक है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे डॉ. सुधाकर पांडे ने की। एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

सहायक महानिदेशक सुधाकर पांडे ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।

75 व 90 दिन में खुदाई के लिए हो जाती है तैयार

हिसार | एचएयू में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे।

एमएसपी 16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं। यह 90 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। कुफरी सुख्याति किस्म केवल 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19-10-23	2	2-4

एमएसपी 16-307 और कुफरी सुख्याति की भंडारण क्षमता और पैदावार ज्यादा

एचएयू में आलू अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों की अनुशंसा जारी की गई। एमएसपी/16-307 और कुफरी सुख्याति दोनों अधिक पैदावार और अधिक भंडारण क्षमता वाली किस्में हैं। एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं। यह 90 दिन में जबकि कुफरी सुख्याति किस्म मात्र 75 दिन में खोदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है।

समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। इस अवसर पर शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह, डॉ. एसके तेहलान, डॉ. पीएस नायक, डॉ. बीपी सिंह, डॉ. वीके बत्रा, डॉ. एके भाटिया, डॉ. केएस बसवाना मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-10-23	3	6-8

आलू की 2 नई किस्मों को मिली स्वीकृति

अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला संपन्न

मंच से सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए।

हिसार, 18 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की 3 दिवसीय कार्यशाला के तीसरे दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुख्याति शामिल हैं।

यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुख्याति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है।

अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-10-23	3	2-8

आलू की दो नई किस्मों को मंजूरी, उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों में कर सकेंगे खेती

- स्वीकृत किस्म एमएसपी/16-307 और कुफरी सुखयाति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक
- हकृवि में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। इसमें एमएसपी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। ये दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गूदा क्रीमी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है। जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

मंच से सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए। • पीआरओ

आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर दिया जोर

डा. सुधाकर पांडे ने भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान माडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन व रिलीज के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया।

25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक

कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया। इस अवसर पर केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. बृजेश सिंह, सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डा. एसके ढिल्लन, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के पूर्व निदेशक डा. पीएम नायक, केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के पूर्व निदेशक डा. बीपी सिंह, विश्वविद्यालय सब्जी विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. वीके बत्रा, डा. एके भाटिया एवं डा. वीएस बसवाना आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	19-10-22	1	1-8

41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला में मिली स्वीकृति

आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति, भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हरिभूमि न्यूज ▸▸हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन बुधवार को आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एमएसपी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल है। ये दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है।

■ नोटिफाइड किस्म एमएसपी/16-307 व कुफरी सुखयाति

एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता है कि [illegible]

हिसार। [illegible] महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए।

इसके आलू व गूदा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर

सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। [illegible]

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. ब्रजेश सिंह, सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डॉ. एसके [illegible] सहित भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. पीएस नायक, केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के पूर्व निदेशक डॉ. बीपी सिंह, विश्वविद्यालय सब्जी विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बत्रा, डॉ. [illegible] सहित अन्य वैज्ञानिकगण भी मौजूद रहे।

वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने पर किया मंथन

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने [illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	19-10-23	10	6-7

आलू की दो नई किस्मों को मिली मंजूरी

हिसार, 18 अक्तूबर (ट्रि)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एस.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल है। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है।

एस.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन व रिलीज के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। कार्यशाला के दौरान विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18-10-23	4	3-8

कार्यशाला • एचएयू में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने रखे सुझाव

आलू में पत्ता मरोड़ वायरस बढ़ रहा, राजमा, गन्ना और दलहनी फसलों की इंटर क्रॉपिंग के जरिये किसान बढ़ा सकते हैं आय

भास्कर न्यूज | हिसार

उत्तर भारत में आलू की फसल में पत्ता मरोड़ वायरस का प्रकोप बढ़ रहा है। आलू में किसी तरह के पेस्टीसाइड्स का प्रयोग करने की बजाय इंटर क्रॉपिंग के जरिये इस वायरस को नियंत्रित किया जा सकता है। आलू के साथ राजमा, गन्ना और दलहनी फसलें लगाकर इस वायरस को काफी हद तक काबू कर सकते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने सुझाव रखा। वर्कशॉप में उत्तर भारत में होने वाली प्रमुख सब्जी की आलू फसल में पत्ता मरोड़ रोग काफी कॉमन पाया गया। इसको नियंत्रित करने को लेकर वर्कशॉप में चर्चा हुई, जिसमें इंटर क्रॉपिंग के जरिए इस पर रोकथाम का बेस्ट तरीका बताया गया।

25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक

• इंटर क्रॉपिंग यानि दो तरह की फसलें एक साथ लेकर आलू को लीफ रोल वायरस से बचाया जा सकता है। दूसरी फसल साथ लेकर किसान कम जमीन में ज्यादा आमदनी भी ले सकता है। इससे किसान की इनकम भी डबल हो सकती है। राजमा, गन्ना या दलहनी फसलों से मिट्टी के पोषक तत्व बने रहते हैं। इसके कारण आलू में पत्ता मरोड़ रोग नहीं आता और किसान को होने वाले फसल के नुकसान से बचाया जा सकता है।

• वर्कशॉप के दूसरे दिन केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह और सीआईआरडीए के निदेशक डॉ. दीपके सिंह भी उपस्थित रहे। एचएयू के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसमें देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

प्रदेश के लिए वेरायटी बेस्ट

हरियाणा की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी बादशाह, कुफरी बहार, कुफरी सतलज, कुफरी पुखर और कुफरी पुखराज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्में हैं।

वर्कशॉप के दूसरे दिन दो सैशन में दी 22 प्रजेंटेशन

एचएयू सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डॉ. एसके तेहलान ने बताया कि वर्कशॉप के दूसरे दिन कीट पतंग वाली बीमारियों और आलू की फसल को खाद, पानी आदि संस्य क्रियाओं को लेकर दो सैशन हुए। कीट पतंग के लिए 10 प्रजेंटेशन और सस्य क्रियाओं के लिए 12 प्रजेंटेशन दी गई है। वर्कशॉप के अंतिम दिन नई वैरायटीज को लेकर चर्चा होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	18.10.2023	--	--

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हकृवि में आयोजित 41वीं तीन दिवसीय कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 18 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गूदा पीले रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों

को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक तनाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुरक्षा और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और संसाधन व विशेष के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, फसल सुरक्षा सहित मसलों से संबंधित विषयों पर मंथन किया। इस अवसर पर केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. ब्रजेश सिंह, सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डॉ. एस.के.सहरावत सहित भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. पी.एम. नायक, केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के पूर्व निदेशक डॉ. बी.पी. सिंह, विश्वविद्यालय सब्जी विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पी.के. भाटा, डॉ. ए.के. भाटिया एवं डॉ. बी.एस. दहिया सहित अन्य वैज्ञानिकगण भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	18.10.2023	--	--

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुख्याति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और

पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है।उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.10.2023	--	--

अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति पैदावार बढ़ाने में सहायक

मंच से सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुदा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ. सुधाकर पांडे ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव महिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन व रिलीज के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्मों, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।